

---

Dvijaprokta Darshanoparanta Shiva Stuti 1

द्विजप्रोक्ता दर्शनोपरान्त शिवस्तुतिः १

Document Information

---

Text title : Dvijaprokta Darshanoparanta Shiva Stuti 1

File name : dvijaproktaDarshanoparAntashivastutiH1.itx

Category : shiva, shivarahasya, stuti

Location : doc\_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | ugrAkhyah saptamAMshaH | adhyAyaH 25| 51-60||

Latest update : June 16, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 16, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

द्विजप्रोक्ता दर्शनोपरान्त शिवस्तुतिः १



(शिवरहस्यान्तर्गते उग्राख्ये)

द्विजः (उवाच)

कृतार्थोऽस्मि महादेव त्वत्पादाम्बुजदर्शनात् ।  
यदिदं चिन्त्यते नित्यं योगिभिर्योगतत्परैः ॥ ५१ ॥  
तदिदं पादकमलं तव देवोत्तम प्रभो ।  
सर्वदेवस्तुतं नित्यं दृष्टं भाग्यवशान्मया ॥ ५२ ॥  
यद्विष्णुनेत्रपद्मेन पूजितं त्वत्पदाम्बुजम् ।  
सर्वामरगणाराध्यं दृष्टं भाग्यवशान्मया ॥ ५३ ॥  
इदमत्युत्तमं रूपं दृष्टं केनापि न प्रभो ।  
दृष्टमद्य मया शम्भो त्वत्प्रसादेन मोक्षदम् ॥ ५४ ॥  
भक्तिस्त्वय्येव सततं ममास्त्वव्यभिचारिणी ।  
नित्यं तवैव पूजायां भतिरस्तु मम प्रभो ॥ ५५ ॥  
तव नामजपे भक्तिर्ममास्त्वन्वहमीश्वर ।  
भक्तिरस्त्वनिशं शम्भो तत्र नामानुकीर्तने ॥ ५६ ॥  
नित्यं मम मनोभृङ्गस्तवैव चरणाम्बुजे ।  
सञ्चरत्वतिसन्तुष्टो मोक्षपुण्यरसान्वितः ॥ ५७ ॥  
त्वत्पादकमलद्वन्द्वे द्वन्द्वदुःखनिवारके ।  
विष्णुनेत्रार्चिते नित्यं प्रीतिरस्तु महेश्वर ॥ ५८ ॥  
ममास्तु भक्तिरनिशं भस्मरुद्राक्षधारणे ।  
ममास्तु भक्तिरनिशं शिवभक्ताभिपूजने ॥ ५९ ॥  
शम्भो शिव शिवेत्येव वदतो मम शङ्कर ।  
भस्मरुद्राक्षवपुषस्तनुत्यागोऽस्तु मोक्षद ॥ ६० ॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते द्विजप्रोक्ता दर्शनोपरान्त शिवस्तुतिः १ सम्पूर्णा ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् । उग्राख्यः सप्तमांशः । अध्यायः २५। ५१-६० ॥

- .. shrIshivarahasyam . ugrAkhyah saptamAMshaH . adhyAyaH 25 . 51-60..

Proofread by Ruma Dewan

---



*Dvijaprokta Darshanoparanta Shiva Stuti 1*

pdf was typeset on June 16, 2024



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

